कैबिनेट मिशन - 1946

जुलाई 1945 में ब्रिटेन में सत्ता का परिवर्तन हुआ और लेबर पार्टी की सरकार का गठन हुआ जिसके प्रधानमंत्री एटली बने। लेबर पार्टी की यह नीति थी कि भारतीयों को पूर्ण स्वतंत्रता की मान्यता प्रदान की जाए। प्रधानमंत्री एटली ने 15 फरवरी 1946 को भारतीय संविधान सभा की स्थापना एवं तत्कालीन ज्वलन्त समस्याओं पर भारतीयों से विचार-विमर्श के लिए 'कैबिनेट मिशन' को भारत भेजने की घोषणा की।

भारतीयों को एवं सत्ता हस्तांतरित करने के लिए तीन सदस्यी कैबिनेट मिशन 24 मार्च 1946 को भारत आया। कैबिनेट मिशन के सदस्यों के नाम इस प्रकार थे - लार्ड स्टैफोर्ड क्रिप्स, पैथिक लारेंस और ए० वी० अलैक्जेंडर। इस मिशन को विशिष्ट अधिकार दिये गये थे तथा इनका कार्य भारत को शांतिपूर्ण सत्ता हस्तांतरण के लिए उपायों एवं सम्भावनों की तलाश थी। ~~कैबिनेट मिशन ने अपना फार्मूला पेश किया~~ जिसे कॉंग्रेस एवं मुस्लिम

कैबिनेट मिशन के सदस्यों ने भारत के विभिन्न दलों एवं विभिन्न राष्ट्रीय नेताओं के साथ लम्बी बातचीत की लेकिन कॉंग्रेस एवं लीग के बीच समझौता नहीं हो सका। अतः कैबिनेट मिशन का फार्मूला इन दोनों को मानना पड़ा था।

कैबिनेट मिशन के तहत भारत में संविधान सभा का गठन 1946 में हुआ और अंतरिम सरकार का गठन हुआ जिसके प्रधान मंत्री जवाहर लाल नेहरू बने।

कैबिनेट मिशन के अनुसंसा पर जो संविधान सभा का गठन हुआ था उनके सदस्यों का चुनाव प्रान्तों एवं देशी रियासतों से किया गया था। लगभग 10 लाख की जनसंख्या पर एक सदस्य चुना गया था। इस प्रकार संविधान सभा के 389 सदस्य थे। इन सदस्यों में से 292 प्रांतों से चुनकर आये थे जबकि 93 देशी रियासतों से चुनकर आये थे। शेष 4 कमिश्नरी क्षेत्र से आये थे।

Scanned by TapScanner

जब मुस्लिम लीग ने अपने सदस्यों को वापस बुला लिया तो संविधान सभा की कुल सदस्यों की संख्या 299 रह गयी थी।
संविधान सभा के निर्माण में कांग्रेस को कुल 296 सीटों में से 201 पर विजय प्राप्त हुई, दूसरी ओर मुस्लिम लीग को 73 सीटें मिलीं। कांग्रेस के अप्रत्याशी सफलता के कारण मुस्लिम लीग भयभीत हो गयी। अतः उसने 29 जून 1946 को कैबिनेट मिशन योजना को अस्वीकार कर दिया। उसने पाकिस्तान के माँग को लेकर 16 अगस्त 1946 को "प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस" के रूप में मनाया। देश भर में भयंकर दंगा फैल गया। केवल ~~कलकत्ता~~ बंगाल में सात हजार आदमी मारे गये।

2 सितम्बर 1946 को जवाहर लाल नेहरू के नेतृत्व में 12 सदस्यीय अन्तरिम सरकार ने शपथ ग्रहण किया, वेवेल के अनुरोध पर मुस्लिम लीग के 5 सदस्य अन्तरिम सरकार में शामिल हुए पर उनका रुख हठधर्मिता का रहा। ~~~~

कैबिनेट मिशन योजना के अच्छे और बुरे पक्ष की समीक्षा के आधार पर यह कहा जा सकता है कि भारत को स्वतंत्रता दिलाने में इस योजना की भूमिका महत्वपूर्ण थी। इसमें उदारवादी तत्वों की झलक मिलती है और अंग्रेजों ने नेक इरादे से भारत को स्वशासन सौंपना चाहा। पाकिस्तान की मांग अस्वीकार कर तथा संविधान सभा की सम्प्रभुता स्वीकार कर इस योजना ने भारत को स्वतंत्रता के दरवाजे तक पहुँचाने में सहायक का काम किया था।

Scanned by TapScanner